एक मानव की इच्छा

श्री नुसरत इजहार सिद्दीकी
वैयक्तिक सहायक

काश वो भी एक ऐसा मानव होता ।
जिसे हर ओर से सराहा पूछा जाता
मुझे चाह हो के न हो, पर
मुझे अच्छा सुन्दर बनाया जाता
जाया जाता संवारा जाता ।
काश मैं भी एक ऐसा मानव होता ।।

जहाँ चाहता एडमीशन पाता
जो मैं चाहता वही बन जाता
बचपन से आगे तक वजीफा पाता
मैं भी डाक्टर या इन्जीनियर बन जाता
काश मैं भी एक ऐसा मानव होता ।।

यदि डाक्टर या इन्जीनियर न बन पाता
तो फिर भी नोकरी उँची पता
बिना मेहनत ही 'आई० ए० एस०' बन जाता
बिना नम्बर के प्रमोशन पाता ।
काश मैं एक ऐसा मानव होता ।।

कुछ भी न बन पता तो नेता बन जाता
एम.पी. या एम.एल.ए. शीघ्र बन जाता
क्योकि यहाँ भी मै पहला नम्बर पाता
फिर तो केन्द्र में, नहीं तो राज्य सभा में मंत्री बन जाता
काश मैं एक ऐसा मानव होता ।।

पर हाय रे किस्मत
यह सब तो एक सपना ही रहा
मैं जो था मै वो ही रहा
कुछ न बना बस पी.ए. बन गया
फिर भी ठीक है, सहस्त्रों में अच्छा हूँ
जैसा भी हूँ अपनी धुन का पक्का हूँ
जो कुछ भी हूँ अपनी महानता का फल हूँ
शुक्र है उस मालिक का जैसा भी तेरा बन्दा हूँ ।।

*****